हरिद्वार। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर सेवाकेंद्र पर आयोजित 'संत संगोष्ठी' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.प्रेमलता बहन। इसके पश्चात् उन्होंने सभी को 'आत्म-स्मृति' का तिलक देकर 'रक्षा-सूत्र' भी बांधा।

शांतिवन। राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमुर्ति दलिप सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं स्वराज्याधिकारी हूँ।

- बापदादा अपने हर बच्चे को राजा बच्चा कहते हैं और भविष्य में भी राजा के रुप में देखना चाहते हैं। इसके लिए बाबा कहते कि अभी स्वराज्याधिकारी बनो क्योंकि अभी जो जितने स्वराज्याधिकारी बनेंगे, वो भविष्य में उतने ही विश्व राज्याधिकारी बनेंगे

योगाभ्यास:- मैं आत्मा भृकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ... हर घण्टे में एक बार अशरीरी होने का अभ्यास करें...।

- दिन में कम से कम दो बार अपना स्वराज्य दरबार लगायें और अपने सूक्ष्म तथा स्थूल कर्मेन्द्रियों को श्रीमत अनुसार चलने का ऑर्डर दें। साथ ही चेक करें कि वे आपके आदेशानुसार चल रहे हैं या नहीं?

- ऐसी धुन लगायें कि जब हम नीचे देखें तो चारों ओर चमकती हुई आत्मायें ही दिखाई दें और जब ऊपर देखें तो सर्वशक्तिवान ज्ञान सूर्य ही दिखाई दें। इसके अतिरिक्त हमें संसार में और कुछ भी दिखाई न दे।

धारणा:- आत्मिक दृष्टि

- जब तुम्हारी आत्मिक दृष्टि नेचुरल हो जायेगी तब संसार में नेचुरल कैलिमिटिज शुरू होंगी।

- जब तुम्हारी आत्मिक दृष्टि नेचुरल हो जायेगी, तब संसार की सर्व आत्माओं की दृष्टि तुम चमकते हुए चैतन्य सितारों पर जायेगी।

चिंतन:- मैं कहां तक स्वराज्याधिकारी बना हूँ?

- मेरी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियां मुझे चलाती हैं या मैं उन्हें चलाता हूँ?

- सदा स्वराज्याधिकारी बनने के लिए क्या करें?

- स्वराज्याधिकारी आत्मा के लिए बाबा के महावाक्यों को याद करें?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! चूंकि इस वर्ष को हम 'ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता वर्ष' के रूप में मना रहे हैं और बापदादा ने बाप समान बनने का होमवर्क भी हमें दिया था इसलिए ब्रह्मा बाबा के जीवन की मुख्य धारणाओं को 18 कदम के रूप में हमने आपके सामने रखे। इस उलझन में ना रहे कि ब्रह्मा बाबा के 8 कदम थे या 108...!! 'कदम' तो केवल एक शब्द है, इसका भाव बाबा को पूरा-पूरा फॉलो करने से है। आशा है आपने इन कदमों की गहरी छाप अपने अंतर में डाली होगी।

अब बाबा को आने में 2 मास शेष रह गए हैं इसलिए पिछले सीजन की मुरलियों की मुख्य प्वाइंट्स को एक बार पुन: हम रिवाइज करेंगे।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं मास्टर ब्रह्मा हूँ।

- ब्रह्मा बाबा को यह नेचुरल स्मृति थी कि मैं 'प्रजापिता ब्रह्मा' हूँ... सब मेरे बच्चे हैं... मुझे सभी को पवित्र बनाना है... बच्चों को घर चलने और भविष्य में राज्य करने के लिए तैयार करना है... उनके मन में सबके लिए शुभभावना और शुभकामना थी... वे गहरी साधना करके पहले स्वयं सम्पूर्ण निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बने और साकार रूप से विदाई लेते हुए बच्चों को यही वरदान देते गए तो इस वरदान के स्वरूप बनकर हम भी मास्टर ब्रह्मा बन जायें...।

योगाभ्यास - जैसे ब्रह्मा बाबा ने निराकारी स्थिति का बहुत अभ्यास किया था, वैसे ही हम भी करें... सबको आत्मिक दृष्टि से देखें... आत्मिक दृष्टि का इतना गहरा अभ्यास हो जाए कि देह दिखायी ही ना दे... सिर्फ भृकुटि पर चमकती हुई मणि ही दिखायी दे...।

- इस साकार सृष्टि पर तो सारे कल्प रहना ही है, अब हम निराकारी लोक, अपने घर में ज्यादा से ज्यादा समय रहें... दिन में कई बार अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को समेटकर ऊपर घर में जाकर निराकारी अवस्था में, निराकार बाबा के पास बैठ जाएं..।

- स्वयं को पांच सेकण्ड भृकुटि तख्त पर चमकती हुई ज्योति देखें और फिर पांच सेकण्ड परमधाम में महाज्योति को देखें... धीरे-धीरे इस अभ्यास की समयावधि बढ़ाते जाएं... दिन में अनेक बार इस अभ्यास को करें...।

धारणा - निर्विकारी और निरहंकारी

- निर्विकारी बनने के लिए स्मृति - सभी इष्ट देव और देवियां हैं... पवित्र आत्मायें हैं... ईश्वर की संतान मेरे आत्मिक भाई हैं...।

- निरहंकारी बनने के लिए स्मृति - जहां भी अभिमान का 'मैं' शब्द आए वहां याद करें कि 'मैं कौन और मेरा कौन...'।

चिंतन - निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति क्या है? इनका आपस में क्या सम्बन्ध है?

- इन श्रेष्ठ आध्यात्मिक स्थितियों को प्राप्त करने के लिए मैं क्या पुरुषार्थ करूं? अपने पुरुषार्थ का व्यक्तिगत प्लान बनायें।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! ब्रह्मा बाबा इन तीन धारणाओं को अपनाकर परमात्म तुल्य बन गए। ये हमारी सभी धारणाओं और योगयुक्त स्थिति का सार है। जितना-जितना हम निराकारी बनते जाते हैं उतना-उतना आत्मा निर्विकारी बनती जाती है और निर्विकारी बनने से जीवन में सम्पूर्ण निरहंकारी आती जाती है। ये तीनों जहां हैं वहां सेवा और सफलता हमारे पीछे-पीछे चलते हैं। तो अब हम भी बाप समान निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बनें।

क्या मनुष्य जीवन...

पृष्ठ 3 का शेष

मिसाइलों एवं परमाणु-शस्त्रों की बम वर्षा करके इस कलियुगी पुरानी सृष्टि का महाविनाश करने के निमित्त बनेंगे। प्रलय के समय आकाश से इसी 'अग्नि-वर्षा' का वर्णन कई धर्म-ग्रंथों में भी आता है। इस महाभारी विनाश के बाद ही सृष्टि पर नई पावन दैवी सतयुगी सृष्टि, जिसे 'स्वर्ग' अथवा 'वैकुण्ठ' भी कहा जाता है, की स्थापना होगी। स्वयं परमात्म शिव उसी नई सृष्टि अथवा भारत के प्राय: लुप्त आदि सनातन देवी-देवता धर्म की पुनर्स्थापना 'ब्रह्माकुमारी' के माध्यम से सच्चा गीता ज्ञान सुनाकर तथा राजयोग सिखलाकर वर्तमान समय कर रहे हैं।

सामाजिक भेदभाव ...

पृष्ठ 1 का शेष

हम अपने जीवन में श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी जितनी अधिक जमा करेंगे उतना ही अधिक हमारा आत्मबल बढ़ता है।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.निरूपमा ने कहा कि परमात्मा के घर में व्यक्ति की जाति से नहीं बल्कि कर्म से पहचान होती है। जुबान से हरि का नाम लेना, हाथ से श्रेष्ठ कर्म करने वाला ही सच्चा मानव है।

ब्र.कु.सोमप्रभा ने कहा कि आत्मज्ञान से ही मनुष्य विश्व कल्याण की भावनाओं को जीवन में धारण कर सकता है। इस कार्यक्रम को ब्र.कु.सुमन बहन, ब्र.कु.सारिका बहन, ब्र.कु.मीना बहन ने भी सम्बोधित किया।

सपनों को साकार...

पृष्ठ 1 का शेष

पुण्यतिथि पर महाराष्ट्र के अहमदनगर में 300 स्कूल के छात्राओं द्वारा उन्हीं की वेशभूषा दादी जी को श्रद्धांजलि दी जिसे 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज किया गया। जिसका सर्टिफिकेट श्रद्धांजलि कार्यक्रम में ब्र.कु.मुन्नी बहन को भेंट किया गया।

इस अवसर पर ब्र.कु.करूणा, ब्र.कु.मोहिनी, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.चंद्रिका, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.भूपाल ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए तथा दादीजी की स्मृति में बने प्रकाश स्तम्भ पर श्रद्धा सुमन के पुष्प अर्पित किए।

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल एम.के.नारायणन को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.कानन बहन।

हरदा। जिलाधिकारी डॉ.सुदाम खंडे को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.भगवती बहन।

जम्मु। नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अध्यक्ष सविंद्र गुप्ता को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन।

मलाड, मुम्बई। एल. एण्ड टी. ट्रेनिंग सेंटर के सदस्यों को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं फिरदोष, अजय, ब्र.कु.कुंती बहन, ब्र.कु.नीरज बहन तथा अन्य।

नाभा। 'सम्मान समारोह' कार्यक्रम के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.प्रवीण बहन, ब्र.कु.हरप्रीत बहन, ब्र.कु.गुलशन बहन, ब्र.कु.अशोक तथा अन्य।

पुणे। डॉ.सिद्धराज को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.अनीता बहन।